

रॉबर्ट वानॉय, प्रमुख भविष्यवक्ता, व्याख्यान 2

यशायाह 1-2:4

सी. यशायाह की पुस्तक की संरचना

1. यशायाह 1-6 न्याय और आशीर्वाद

हमने ए को देखा, "यशायाह पैगंबर;" बी., "पुस्तक की ऐतिहासिक सेटिंग्स;" और सी. आखिरी घंटे में "पुस्तक की संरचना"। अब हम इस खंड के साथ उस संरचना के भीतर अध्याय 1-6 को लेने जा रहे हैं, जिसका मैंने उल्लेख किया था, वे सामान्य थे, लेकिन उन्हें निर्णय के साथ शुरू होने वाले तीन खंडों के साथ इस टूटने की विशेषता थी, जो आने वाले आशीर्वाद के संक्षिप्त खंड के साथ समाप्त होते थे। वह 1:1-2:5 था और आशीर्वाद का भाग 2:1-4 था; और फिर 2:6-4:6 जिसमें आशीर्वाद का भाग 4:2-6 है; और अंत में, 5:1-6:13, आशीर्वाद 6:1-13 के साथ। अब, अध्याय 1-6 को देखते हुए, मैं अपना ध्यान पूरे खंड के बजाय आशीर्वाद के संक्षिप्त खंड पर केंद्रित करना चाहता हूँ। 2:1-4 पर पहुंचने से पहले मैं पहले खंड 1:1-31, निर्णय के खंड पर कुछ टिप्पणियाँ करूँगा। मैं आज अपना अधिकांश समय 2:1-4 पर बिताना चाहता हूँ।

यशायाह 1:1-2 - अभियोग और व्यवस्थाविवरण अध्याय 1-6 के पहले खंड में, 1:1 में उस परिचयात्मक पद के बाद, आप देखते हैं कि यशायाह किस तरह से शुरू होता है। यह बहुत दिलचस्प शब्दावली है। वह पद 2 में कहते हैं, "हे स्वर्ग, सुनो, हे पृथ्वी, सुनो क्योंकि प्रभु ने कहा है।" "सुनो हे स्वर्ग, सुनो हे पृथ्वी।" यह आपको क्या याद दिलाता है? आपने इस प्रकार की शब्दावली की पिछली घटना कहाँ देखी है?

यह व्यवस्थाविवरण पर वापस जाता है जहां मूसा गवाह के रूप में आकाश और पृथ्वी को यह सुनने या देखने के लिए बुलाता है कि क्या इज़राइल वाचा के प्रति वफादार रहेगा। इसलिये यशायाह आकाश और पृथ्वी को साक्षी ठहराता है; यह दृढ़तापूर्वक वाचा संबंधी शब्दावली की याद दिलाता है। उदाहरण के लिए व्यवस्थाविवरण 4:26 को देखें। व्यवस्थाविवरण 4:26, "मैं आज आकाश और पृथ्वी को तुम्हारे विरुद्ध साक्षी देता हूँ, कि जिस देश के अधिकारनों होने को तुम

यरदन पार जाने पर हो उस में से तुम शीघ्र नाश हो जाओगे। यहोवा तुम्हें देश देश के लोगों के बीच तितर-बितर कर देगा।” अर्थात् यदि तुम प्रभु से विमुख हो जाओ। या व्यवस्थाविवरण 30, श्लोक 19 को देखें: “आज के दिन मैं आकाश और पृथ्वी को तुम्हारे विरुद्ध गवाह बनाता हूँ, कि मैं ने तुम्हारे साम्हने जीवन और मृत्यु, आशीष और शाप रखा है। अब ऐसा जीवन चुन लो कि तुम और तुम्हारे बच्चे जीवित रहें, और तुम अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम करो, उसकी वाणी सुनो, और उसे पकड़े रहो।” व्यवस्थाविवरण 32:1, एक और संदर्भ है। तो, यहीं देखिए यशायाह के पहले शब्दों में आपके पास फिर से उस बात का सबूत है जिसके बारे में हमने अमोस की किताब के साथ पिछली तिमाही में बात की थी। लेकिन भले ही ये भविष्यवक्ता हिब्रू शब्द *बेरिट*, वाचा का उपयोग नहीं करते हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि वे वाचा के विचार से परिचित नहीं थे। यह आलोचनात्मक विचार कि वाचा एक देर से आया विचार था और प्रारंभिक भविष्यवक्ताओं को इसके बारे में कुछ भी नहीं पता था क्योंकि उन्होंने बात नहीं की थी और वास्तव में इस शब्द का उपयोग नहीं किया था, वाचा के साथ उनकी परिचितता का आकलन करने का एक वैध तरीका नहीं है, क्योंकि वे वाचा संबंधी शब्दावली का उपयोग करते हैं यह लगातार उस वाचा के रिश्ते में निहित है और वाचा की सामग्री विश्वदृष्टि और संदेश से बंधी हुई पाई गई।

ध्यान दें कि यशायाह वहां से कहां जाता है, वह कहता है, “हे स्वर्ग, सुनो, हे पृथ्वी, सुनो, क्योंकि प्रभु ने कहा है। मैंने बच्चों को पाला-पोसा और उनका पालन-पोषण किया, परन्तु उन्होंने मुझ से विद्रोह किया है।” वहां का हिब्रू शब्द, विद्रोह, *पाशा है*। '*पाशा*' एक शब्द है जो मूल रूप से राजनीतिक क्षेत्र से संबंधित था। इसका मतलब था कानूनी रिश्ता तोड़ना। इसलिए उन्होंने बगावत कर दी है। उन्होंने एक समझौता किया था। वे इस कानूनी रिश्ते में आए थे, लेकिन अब उन्होंने इसे तोड़ दिया है। वे प्रभु से विमुख हो गए हैं।

ईजे यंग का कहना है कि कृतघ्नता की जघन्यता केवल इस तथ्य में निहित नहीं है कि राष्ट्र ईश्वर को अस्वीकार करता है, बल्कि इसमें निहित है कि बेटों का राष्ट्र एक प्यारे पिता को त्याग देता है। ध्यान दें, “मैंने बच्चों को पाला है।” वे बेटे हैं। भगवान उनके पिता थे। “उन्होंने मेरे विरुद्ध विद्रोह किया है।” फिर यंग यह टिप्पणी जोड़ता है, “जो लोग सोचते हैं कि इज़राइल के पास धर्म के लिए प्रतिभा थी, उनके लिए इस कविता को याद रखना अच्छा होगा।” दूसरे शब्दों में, अक्सर यहूदी

लोगों के बीच इन महान धार्मिक अवधारणाओं के विकास को समझाने का प्रयास किसी ऐसी चीज़ से उत्पन्न होता है जिसे यहूदी कॉर्पोरेट व्यक्तित्व या किसी चीज़ के लिए आंतरिक माना जाता है। और यह वास्तव में उस क्षेत्र की उपलब्धियों के साथ बिल्कुल भी न्याय नहीं करता है। ईश्वर ने अपने वचन को कानून का रूप देकर इस लोगों के इतिहास में हस्तक्षेप किया था। इजराइल उससे मुंह मोड़ लेता है। तो, “मैंने बच्चों को पाला है, उनका पालन-पोषण किया है, लेकिन उन्होंने मुझसे विद्रोह किया है। बैल अपने मालिक को और गदहा अपने मालिक की चरनी को जानता है, परन्तु इस्राएल नहीं जानता। मेरे लोग नहीं समझते।” याद रखें कि हमने “जानिए ,” *यदा* शब्द के वाचिक निहितार्थों के बारे में बात की थी , जो याह्वे को अधिपति के रूप में और संधि शर्तों को बाध्यकारी के रूप में पहचानता है। यह वाचा संबंधी महत्व से भरा हुआ शब्द भी है।

यशायाह 1:4-18 तो, वह आगे कहता है: “आह, पापी जाति, दोष से भरी हुई प्रजा।” और शेष अधिकांश अध्याय में अभियोग शामिल है। याद रखें कि हमने उस वाचा नीति के बारे में बात की थी, जहां भविष्यवक्ता एक दूत है जो लोगों के पास प्रभु का अभियोग लाने के लिए आता है। मैं ने तुझ से वाचा बान्धी है, तू ने मुझ से मुंह फेर लिया है। जैसे-जैसे आप अध्याय में नीचे जाते हैं, आप देखते हैं कि अध्याय 1 का केंद्रीय हृदय यही है। श्लोक 4 को देखें, “हे पापी जाति, अपराध से भरी हुई प्रजा, कुकर्म करने वालों का झुंड, भ्रष्टाचार के लिये समर्पित सन्तान! उन्होंने प्रभु को त्याग दिया है, उन्होंने इस्राएल के पवित्र को ठुकरा दिया है, उससे मुंह मोड़ लिया है,” इत्यादि।

श्लोक 11 को देखें: “तुम्हारे बहुत से बलिदान, मेरे लिये क्या हैं?” प्रभु कहते हैं. 'मेरे पास होमबलियों, मेढ़ों और पाले हुए पशुओं की चर्बी बहुत है। मुझे बैलों, मेमनों और बकरियों के खून से कोई खुशी नहीं है।” याद रखें, यह उन अंशों में से एक है जिसे अक्सर पुराने आलोचकों द्वारा उद्धृत किया जाता था जो कहते हैं कि पैगंबर पंथ के विरोधी थे, मूल रूप से अनुष्ठानों के विरोध में थे। वाकई ये बहुत मजबूत है. वह यहूदी लोगों के बलि अनुष्ठानों की निंदा करता है।

श्लोक 12, “ जब तू मेरे सामने उपस्थित होने को आता है, तो तुझ से यह कौन पूछता है, कि यह मेरे आंगनों को रौंदा जाए? निरर्थक भेंट लाना बंद करो।” याद रखें, जैसा कि हमने पहले चर्चा की थी, मुद्दा इतना अनुष्ठान या बलिदान नहीं है, जो निश्चित रूप से अपने लोगों के लिए भगवान की

इच्छा थी। निंदा का कारण पद 15 में दिया गया है। “जब तू प्रार्थना के लिये हाथ फैलाएगा, तब मैं तुझ से आंखें फेर लूंगा; चाहे तुम बहुत प्रार्थना करो, तौभी मैं न सुनूंगा। तुम्हारे हाथ खून से भरे हैं।” इसका कारण यह है: उनके हाथ खून से भरे हुए थे। वे भगवान के नियम से बिल्कुल अलग जीवन जी रहे थे और सोचते थे, “अगर हम सिर्फ अनुष्ठान करते रहें तो सब कुछ ठीक हो जाएगा।” लेकिन भगवान उस तरह की सेवा नहीं चाहते, बस कुछ बलिदान का अनुष्ठान करना चाहते हैं। वह ऐसा हृदय चाहता है जो प्रभु के प्रति समर्पित हो और जो प्रभु की आज्ञा मानने की इच्छा रखता हो। हर कोई कम पड़ जाएगा, लेकिन फिर बलिदान लाने के लिए पश्चाताप और क्षमा है। लेकिन यह लोगों का रवैया नहीं था।

तो, वह श्लोक 16 में क्या कह रहा है? “अपने आप को धोकर शुद्ध करो। अपने बुरे काम मेरी दृष्टि से दूर करो। गलत करना बंद करो, सही करना सीखो!” “सही करना सीखें” क्या है? यह फिर से संविदात्मक है। “सही करना सीखें” का अर्थ है अनुबंध के दायित्वों का पालन करना।

शमूएल को याद है, जब राजत्व स्थापित हुआ था? शाऊल को वाचा नवीनीकरण समारोह के संदर्भ में लोगों के सामने प्रस्तुत किया गया था। उन्होंने कहा, “मैं आपके लिए प्रार्थना करना बंद नहीं करूंगा. मैं तुम्हें भले और सीधे मार्ग पर चलना सिखाऊंगा” (1 शमूएल 12:23)। अच्छा और सही मार्ग, वाचा का मार्ग. यहाँ यशायाह कहता है, “सही करना सीखो।” व्यवस्थाविवरण 6:18 कहता है, “वही करो जो प्रभु की दृष्टि में ठीक और अच्छा है, जिससे तुम्हारा भला हो, और तुम जाकर अच्छे देश पर अधिकार कर सको।” मुख्य विषय है, “वही करो जो अच्छा और सही है।”

यशायाह 1:18-20 एक साथ तर्क करने की अपील अब, श्लोक 18-20 एक साथ तर्क करने की अपील है। फिर से आप कानूनी शब्दावली में हैं। इसका मतलब यह है, श्लोक 18 में, “अब आओ, हम मिलकर तर्क करें, प्रभु कहते हैं।” “एक साथ तर्क करना” मामले पर बहस करना है। आप कानूनी संदर्भ में हैं. “आइए मामले पर बहस करें।” और प्रभु यहां जो कह रहे हैं वह यह है: “आइए मामले पर बहस करें और यह स्पष्ट हो जाएगा कि इज़राइल बिल्कुल वैसा ही है जैसा भगवान कहते हैं। वह उससे दूर हो गई है. उसने अनुबंध की अवज्ञा की है। उसके हाथ खून से भरे हुए हैं।” लेकिन, आश्चर्यजनक रूप से, ईश्वर क्षमा करने और शुद्ध करने को तैयार है। आप देखिए, “आइए

हम मिलकर तर्क करें," प्रभु कहते हैं। 'तुम्हारे पाप यद्यपि लाल रंग के हैं, तौभी वे हिम के समान श्वेत हो जाएंगे; यद्यपि वे लाल रंग के समान लाल हों, तौभी वे ऊन के समान होंगे।' परमेश्वर क्षमा करने के लिए तैयार है।

लेकिन फिर जब आप आगे बढ़ते हैं, ऐसा न हो कि आपको लगे कि यह किसी प्रकार की क्षमा है, भले ही पश्चात्ताप हो या न हो, तो आप ध्यान दें कि अगले श्लोक में प्रभु कहते हैं, "यदि आप इच्छुक और आज्ञाकारी हैं, तो आप भूमि से सर्वश्रेष्ठ खाएंगे; परन्तु यदि तुम विरोध करो और विद्रोह करो, तो तुम तलवार से भस्म किये जाओगे।" विकल्प मौजूद हैं. क्षमा उपलब्ध है, लेकिन आपको इच्छुक और आज्ञाकारी रहना होगा। देखिये, वास्तव में आपके पास यहाँ अलग-अलग शब्दावली में वही दो विकल्प हैं जिनका उपयोग मूसा ने व्यवस्थाविवरण में आम तौर पर किया था: "जीवन चुनें या मृत्यु चुनें ; आशीर्वाद चुनें, अभिशाप चुनें। प्रभु से प्रेम करो; उसकी सेवा करो आशीर्वाद मिलेगा. प्रभु से विमुख हो जाओ, उसकी अवज्ञा करो, श्राप होगा।" ये वही दो विकल्प हैं. यदि तुम इच्छुक और आज्ञाकारी हो तो तुम भूमि का सर्वोत्तम फल खाओगे। यह आशीर्वाद और अभिशाप के बीच का चुनाव है। यशायाह 1:19 में, "परन्तु यदि तुम विरोध करो और बलवा करो, तो तुम तलवार से भस्म किए जाओगे। क्योंकि यहोवा ने ऐसा कहा है।" इसलिए वह राष्ट्र को पश्चात्ताप की आवश्यकता के लिए बुलाता है।

अब, मुझे लगता है कि मैं अध्याय 1, निर्णय के अनुभाग पर अपनी टिप्पणियाँ छोड़ने जा रहा हूँ। तो, आपने देखा कि कैसे पहला अध्याय एक अभियोग से शुरू होता है और यह मुद्दे को इज़राइल के सामने स्पष्ट रूप से रखता है। "तुम मुझ से विमुख हो गए हो; और यदि तुम पश्चात्ताप न करो और मेरी ओर न फिरो, तो न्याय आ जाएगा।" इससे पहले कि हम आगे बढ़ें, अध्याय 1 पद 25 पर ध्यान दें, "मैं अपना हाथ तेरे विरुद्ध बढ़ाऊंगा; मैं तुम्हारा मैल पूरी तरह साफ़ कर दूँगा, तुम्हारी सारी अशुद्धियाँ दूर कर दूँगा।"

यशायाह 2:1-5 हल के फालों में तलवारें आइए अध्याय 2 पर चलते हैं, जो कि आशीर्वाद का वह भाग है जो अध्याय 1 के अनुमानित न्याय के बाद आएगा। आइए 2:1-5 में भविष्यवाणी पढ़ें। यह एक छोटा सा अंश है, लेकिन यह बहुत प्रसिद्ध है। "आमोस के पुत्र यशायाह ने यहूदा और

यरूशलेम के विषय में यही देखा। अन्त के दिनों में यहोवा के मन्दिर का पर्वत सब पहाड़ों में प्रधान किया जाएगा, वह सब पहाड़ियों से ऊंचा किया जाएगा, और सब जातियां उसकी ओर प्रवाहित होंगी। बहुत सी जातियां आकर कहेंगी, 'आओ, हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएं। वह हमें अपने मार्ग सिखाएगा, ताकि हम उसके मार्गों पर चल सकें।' सिथ्योन से व्यवस्था और यरूशलेम से यहोवा का वचन निकलेगा। वह राष्ट्रों के बीच न्याय करेगा, और बहुत देशों के झगड़ों का निपटारा करेगा। वे अपनी तलवारों को पीटकर हल के फाल और अपने भालों को पीटेंगे छँटाई काँटे। राष्ट्र राष्ट्र के विरुद्ध तलवार नहीं उठाएगा, न ही वे अब युद्ध के लिए प्रशिक्षण लेंगे। हे याकूब के घराने आओ, हम प्रभु के प्रकाश में चलें।" भविष्यवाणी का मूल वास्तव में केवल तीन छंद हैं क्योंकि पहला छंद केवल एक परिचय है। "आमोज़ के पुत्र यशायाह ने यही देखा।" और अंतिम श्लोक एक समापन उपदेश है। "आओ याकूब के घराने, हम प्रभु के प्रकाश में चलें।" तो, यह वास्तव में छंद 2, 3, और 4 हैं जो आने वाले आशीर्वाद की भविष्यवाणी का केंद्र

हैं। मीका 4:1-5 समानांतर अब, जैसा कि आपने पिछली तिमाही में पढ़ा, यह भविष्यवाणी लगभग मीका 4:1-5 के समान है। हालाँकि, यदि आप मीका की ओर मुड़ते हैं, तो आप देखेंगे कि मीका, हालाँकि यह काफी हद तक वैसा ही है, इसमें एक अतिरिक्त कविता शामिल है जो आगे शांति के समय का वर्णन करती है जिसके बारे में यशायाह कविता 4 में बात करता है। यशायाह कविता 4 में कहता है कि "तलवारें चलेंगी" हल के फालों से पीटे जाएं, राष्ट्र राष्ट्र के विरुद्ध तलवार नहीं उठाएगा, न ही वे अब युद्ध के लिए प्रशिक्षण लेंगे।" और यदि आप मीका को देखते हैं, तो आप उसके ठीक बाद देखते हैं, मीका 4 के श्लोक 3 में, "एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के खिलाफ तलवार नहीं उठाएगा, न ही वे फिर से युद्ध के लिए प्रशिक्षण देंगे।" लेकिन मीका 4 की आयत 4 पर ध्यान दें: "हर एक अपनी अपनी बेल और अंजीर के पेड़ तले बैठा करेगा, और कोई उन्हें न डराएगा, क्योंकि सर्वशक्तिमान यहोवा ने यही कहा है।" वहां हर एक मनुष्य अपनी अपनी बेल और अंजीर के वृक्ष के तले बैठा करेगा, और इस शान्ति के समय में कोई वस्तु लोगों को भयभीत या स्तब्ध नहीं कर सकेगी। फिर अंतिम उपदेश यशायाह उपदेश के समान है लेकिन इसका शब्दांकन थोड़ा अलग है। मीका में आयत 5 है: "क्योंकि सब जातियाँ अपने देवताओं के नाम पर चल सकती हैं। परन्तु हम

अपने परमेश्वर यहोवा के नाम पर युगानुयुग चलते रहेंगे।” सचमुच इस्राएल के लिए सच्चे परमेश्वर यहोवा का अनुसरण करने के लिए एक उपदेश। वह वही हैं जो इन सभी लोगों को वापस लाने में सक्षम थे। अन्य लोग अन्य देवताओं का अनुसरण कर सकते हैं, लेकिन हम हमेशा-हमेशा के लिए अपने भगवान भगवान का अनुसरण करेंगे।

मैं मीका और यशायाह मार्ग दोनों पर टिप्पणी करूँगा, लेकिन आइए यशायाह मार्ग पर वापस जाएँ। मुझे लगता है, और मैं इसे भविष्यवाणी पर अधिक विशेष रूप से देखने से पहले एक सामान्य तरीके से कहता हूँ, कि हमारे पास शांति और धार्मिकता, या न्याय के समय का रहस्योद्घाटन है, जो एक ऐसे समय की बात करता है जिसमें बाहरी शांति होगी और यहाँ पृथ्वी पर सुरक्षा; हाँ, बाहरी शांति और सुरक्षा का समय। मीका के संदर्भ में ध्यान दें, कि मीका 4:1 वास्तव में मीका अध्याय 3 के अंत से ही प्रवाहित होता है।

मीका अध्याय 3 के अंत में आपके पास यरूशलेम शहर के आने वाले विनाश की बात करने वाला एक अंश है। मीका 3:10 कहता है, “उन्होंने सिय्योन को खून-खराबा करके, और यरूशलेम को दुष्टता से दृढ़ किया है। उसके नेता रिश्वत लेकर न्याय करते हैं, उसके पुजारी कीमत लेकर शिक्षा देते हैं।” श्लोक 12 फिर कहता है, “इसलिये तेरे कारण सिय्योन को खेत की नाईं जोता जाएगा। यरूशलेम मलबे का ढेर बन जाएगा, मन्दिर का टीला झाड़ियों से घिर जाएगा।” यह यरूशलेम पर न्याय की स्पष्ट भविष्यवाणी है। यह बिल्कुल स्पष्ट प्रतीत होता है कि यह आलंकारिक, प्रतीकात्मक भविष्यवाणी नहीं है; यह बहुत विशिष्ट है। यरूशलेम शहर नष्ट होने वाला है, और यह 586 ईसा पूर्व में मीका और यशायाह के समय के कुछ ही समय बाद पूरा हुआ जब बेबीलोनियन आये। और नगर को नष्ट कर दिया। यह अक्षरशः पूरा हुआ। लेकिन आप देखते हैं कि मीका 3 सीधे 4 में प्रवाहित होता है।

मीका 4:1 एक विरोधाभास प्रदान करता है जब यह कहता है, "परन्तु अन्त के दिनों में ऐसा होगा, कि यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा, और सब पहाड़ियों से अधिक ऊंचा किया जाएगा।" ; लोग उसकी ओर प्रवाहित होंगे। और जाति जाति के लोग आकर कहेंगे, 'आओ, हम यहोवा के पर्वत पर चलें। व्यवस्था सिय्योन से, और यहोवा का वचन यरूशलेम से निकलेगा।' इसलिए भले ही यरूशलेम नष्ट हो जाएगा, भविष्य में एक समय आएगा जब सभी राष्ट्र

यरूशलेम की ओर आएं, और पृथ्वी के लोग पूजा करने के लिए आएं, और कानून यरूशलेम से निकलेगा . संदर्भ में, विशेष रूप से मीका की भविष्यवाणी में, यह बहुत स्पष्ट प्रतीत होता है कि हम यहां यरूशलेम के बारे में बहुत शाब्दिक अर्थ में बात कर रहे हैं, प्रतीकात्मक अर्थ में नहीं। लेकिन याद रखें मैंने कहा था कि यह बाहरी शांति और सुरक्षा के समय का वर्णन करता प्रतीत होता है, एक ऐसा समय जब भगवान अपने लोगों की रक्षा करेंगे। यह ऐसा समय नहीं है जब भगवान सिर्फ अपने लोगों को खतरे से बचाएंगे। ऐसा लगता है जैसे यह ऐसा समय है जब खतरा नदारद है। हर एक मनुष्य अपनी अपनी बेल और अंजीर के वृक्ष तले बैठा करेगा; और मीका कहता है, और मनुष्यों को डरानेवाली कोई वस्तु न होगी। तो यह सिर्फ चारों ओर खतरे के बीच सुरक्षा नहीं है; यह एक ऐसा समय है जिसमें खतरे का अभाव है, एक ऐसा समय है जब यरूशलेम प्रभु के वचन को प्रसारित करने का केंद्र होगा, एक ऐसा समय जब पृथ्वी पर न्याय स्थापित होगा, और राष्ट्रों के बीच शांति होगी। तलवारों को पीट-पीट कर हल के फाल बना दिया जाएगा, और युद्ध नहीं लड़ा जाएगा।

यह कब होगा? अब, ये केवल सामान्य टिप्पणियाँ हैं। सवाल यह है कि यह कब होगा? यहां आपको युगांतशास्त्र के बीच के अंतरों से संबंधित बहुत सारे अंतर मिलेंगे सिस्टम. निस्संदेह, आपके पास सहस्राब्दी पूर्व, सहस्राब्दि बाद और सहस्राब्दी व्याख्याकार हैं जिन्होंने इस अंश को देखा है और इसकी कुछ अलग तरह से व्याख्या की है। मैं कुछ मिनटों में उसमें शामिल होना चाहता हूं। लेकिन आइए हम इस पर अपनी चर्चा यशायाह अध्याय 2, श्लोक 2 के पहले वाक्यांश से शुरू करें, और वह है "अंतिम दिनों में," हिब्रू में

अहारित हयामीम / "अंतिम दिनों में" अब, हिब्रू में "अंतिम दिनों में" शब्द का क्या अर्थ है? मुझे लगता है कि बहुत से लोग तुरंत यह मान लेते हैं कि जब आप उस वाक्यांश, "अंतिम दिनों में" के सामने आते हैं, तो आप युगांतशास्त्र के बारे में बात कर रहे हैं, और यह शब्द स्वयं एक तकनीकी शब्द है, युगांतशास्त्र का संदर्भ देने वाला युगांतशास्त्रीय शब्द है। आप केवल शब्दावली से ही यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकते। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 41:9 को देखें, यह बारह गोत्रों पर याकूब का आशीर्वाद है जहाँ वह कहता है, "याकूब ने अपने पुत्रों को बुलाया। वह कहता है, 'अपने आप

को एक साथ इकट्ठा करो ताकि मैं तुम्हें बता सकूँ कि अंतिम दिनों में तुम *पर क्या बीतेगा!*। ऐसा प्रतीत होता है कि उस शब्द का प्रयोग युगान्तकारी अर्थ में नहीं किया गया है; यह कुछ इस तरह है: मैं आपको भविष्य में, आने वाले समय में क्या होने वाला है, इसके बारे में बताने जा रहा हूँ।

व्यवस्थाविवरण 31:29 बहुत समान है जहां हमें मूसा का आशीर्वाद प्राप्त है। वह व्यवस्थाविवरण 31:29 है: "क्योंकि मैं जानता हूँ कि मेरी मृत्यु के बाद तुम अपने आप को पूरी तरह से भ्रष्ट करोगे और उस मार्ग से भटक जाओगे जिसकी आज्ञा मैं ने तुम्हें दी है, और विपत्ति तुम पर आ पड़ेगी / अन्त के दिनों में तुम पर विपत्ति आ पड़ेगी क्योंकि तुम यहोवा की दृष्टि में बुरा काम करोगे, और अपने हाथों के कामों के द्वारा उसे क्रोधित करोगे।" वह बात कर रहा है जब इस्राएल यहोवा से विमुख हो जाता है, जो वाचा के शाप के अधीन है, और वह भविष्य में है। यह युगांतशास्त्रीय नहीं है। यह अंत समय की बात नहीं कर रहा है। तो वाक्यांश का उपयोग स्वयं ऐसा है कि संदर्भ को यह निर्धारित करना होगा कि भविष्य के समय की किस डिग्री का संकेत दिया गया है। संदर्भ को यह निर्धारित करना चाहिए कि भविष्य के किस विशिष्ट समय का संकेत दिया जा रहा है। आप इसे अधिक सामान्य तरीके से "भविष्य के दिनों में" के साथ-साथ "आखिरी दिनों" में अनुवाद कर सकते हैं और अंत में विचार दे सकते हैं।

अब, उद्धरणों का एक संग्रह है, यदि आप पृष्ठ 5 पर, पृष्ठ 5 के नीचे देखें। ध्यान दें कि हैरिस क्या कहते हैं; उनका कहना है कि इस मुद्दे पर दो धार्मिक प्रश्न हैं। सबसे पहले, *अहारित हयामीम* है, "दिनों का अंत", जो सामान्य भविष्य का संदर्भ देता है, लेकिन विशेष रूप से "अंतिम दिनों" का संदर्भ देता है, जो समय का अंतिम खंड है। इस लेख के लेखक ने अन्यत्र कहा है कि यह वाक्यांश आम तौर पर केवल सामान्य भविष्य को संदर्भित करता है। बाद में, पेज 6 के शीर्ष पर हैरिस यही कहते हैं कि व्याख्या संदर्भ पर निर्भर करती है। इस वाक्यांश का उपयोग अंतिम *एस्केटन दोनों के लिए करना संभव है* और सामान्य भविष्य के लिए क्योंकि स्पष्ट रूप से सभी युगांत विज्ञान भविष्य हैं, लेकिन सभी भविष्य *युगांत* या अंत समय का संदर्भ नहीं दे रहे हैं।

ऊपर उद्धृत लेख से पता चलता है कि संबंधित नए नियम का वाक्यांश भी अक्सर सामान्य भविष्य को संदर्भित करता है और जरूरी नहीं कि समय के अंतिम खंड को संदर्भित करता हो। यह इस विचार पर सवाल उठाता है कि न्यू टेस्टामेंट चर्च खुद को अंतिम दिनों में जीवित मानता था। 1

तीमुथियुस 4:1 में बताए गए खतरनाक समय अनिश्चित भविष्य के लिए चेतावनियों की एक श्रृंखला देते हैं।

ओसवाल्ट, पृष्ठ 6 के नीचे, एक दिलचस्प बयान देता है, मुझे लगता है, जहां तक हिब्रू दिमाग ने भविष्य की कल्पना की है। यशायाह 2, पद 2 के संबंध में वह कहते हैं, "भविष्य के दिनों में," इस तरह वह वाक्यांश का अनुवाद करते हैं। "भविष्य के दिनों में" इस वाक्यांश का अनुवाद है जिसका शाब्दिक अर्थ है, "इन दिनों के बाद में।" देखो, *अहरित् हयामिम* का अर्थ है "दिनों के बाद।"

अहरित् "बाद में" या "पीछे" है। इब्रानियों को भविष्य का सामना हमारी तरह नहीं करना पड़ा। बल्कि, वे अतीत का सामना करते हैं और भविष्य की ओर पीठ करते हैं, ताकि अतीत उनके सामने हो और भविष्य उनके पीछे हो। ठीक है, वह कह रहा है कि हम भविष्य को हमारे सामने कुछ ऐसी चीज़ के रूप में देखते हैं, लेकिन वह कहता है कि हिब्रू दिमाग अतीत की ओर देखता है। भविष्य उनके पीछे है। इज़राइल का झुकाव अतीत की ओर, इतिहास की ओर, ईश्वर ने उनके लिए क्या किया था उसकी ओर था। इसलिए उन्होंने अतीत की ओर देखा। अतीत उनके सामने था; भविष्य उनके पीछे था। कम से कम यह उनका सुझाव है कि यह अभिव्यक्ति कहां से आती है। इसलिए उनका कहना है कि इस वाक्यांश का बाकी हिस्सा कोई तकनीकी नहीं है।

मुझे लगता है कि यही मुख्य बिंदु है। पुराने नियम में यह वाक्यांश आवश्यक रूप से एक सहस्राब्दी युग या उससे भी आगे की अवधि का संदर्भ नहीं दे रहा है। इसके बारे में उनकी समझ का समर्थन करने वाले साक्ष्य पाए जा सकते हैं - उत्पत्ति 49:1 और विभिन्न अन्य संदर्भ देखें। लेकिन उनका कहना है कि इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि इस वाक्यांश का उपयोग अधिक तकनीकी तरीके से किया जा सकता है और ऐसे कई अन्य संदर्भ हैं जहां "अंतिम दिनों में" युगांत संबंधी संदर्भ में है और इसलिए *युगांत* का संकेत मिलता है। तो पृष्ठ 7 के शीर्ष पर, जो महत्वपूर्ण है वह यह देखने के लिए संदर्भ का मूल्यांकन करना है कि वाक्यांश का उपयोग कैसे किया जा रहा है। उस आधार पर, यह नहीं कहा जा सकता कि यह परिच्छेद केवल सहस्राब्दी युग को संदर्भित कर सकता है। अधिक अनुमानित अर्थ में यह चर्च युग से संबंधित हो सकता है।" इससे पूरे परिच्छेद (यशायाह 2 और मीका 4) की व्याख्या के तरीके की एक और चर्चा सामने आती है, और मुझे नहीं लगता कि आप इसे यहां केवल शब्दावली के आधार पर तय कर सकते हैं। आपको

इसे इस बड़े प्रश्न पर सुलझाना होगा कि अनुच्छेद किस बारे में बात कर रहा है।

एक तकनीकी शब्द के रूप में "अंतिम दिन" - ईजे यंग [आगमन के बीच का समय]-- एमिलेनियल

अब दिलचस्प बात यह है कि ऐसे लोग भी हैं जो इस शब्द को तकनीकी शब्द के रूप में लेते हैं। और मैं इसे ईजे यंग के साथ स्पष्ट करना चाहता हूँ। ईजे यंग एक सहस्राब्दिवादी हैं। अर्थात्, ईजे यंग समय के अंत में ईसा मसीह के सहस्राब्दी हजार वर्ष के शासनकाल में विश्वास नहीं करता है - "एमिलेनिअलिस्ट" का अर्थ कोई सहस्राब्दी नहीं है। ईजे यंग यह नहीं मानते कि बाइबल में भविष्य के उस काल का वर्णन किया गया है जिसमें ईसा मसीह पृथ्वी पर शासन करेंगे और न्याय और शांति की स्थिति स्थापित करेंगे। उनका मानना है कि "राज्य मार्ग" जिसे कई लोगों ने पृथ्वी पर भविष्य की अवधि के लिए लागू किया है, उन्हें अधिक प्रतीकात्मक तरीके से लिया जाना चाहिए और चर्च पर लागू किया जाना चाहिए। ये अंश अब सुसमाचार के प्रसार में उन स्थितियों के माध्यम से पूरे हो रहे हैं जो सुसमाचार आध्यात्मिक अर्थ में लोगों के दिलों और जीवन में पैदा करता है। अब, उद्धरणों के उस संग्रह के पृष्ठ 7 पर, पृष्ठ के नीचे, यंग कहते हैं, "इसलिए, यह वाक्यांश युगांतशास्त्रीय है। जब अंतिम दिन प्रकट होंगे, तो वे मसीहा को प्रकट करेंगे जो वह पूर्णता और लक्ष्य है जिसकी ओर पिछला इतिहास इशारा करता रहा है। वोस देखें. हमारा मानना है कि वोस सही ढंग से चुनाव लड़ रहा है।" तो यहां वोस के साथ सहमति में यंग का विचार है कि "यह वाक्यांश पूरी तरह से युगांत विज्ञान के क्षेत्र से संबंधित है। यह युगांतशास्त्र के सामूहिक पहलू से संबंधित है, जो अपनी सीमा के अनुसार लोचदार और अपनी स्थिति के अनुसार गतिशील दोनों है। नया नियम सिखाता है कि यह अवधि, दिनों के अंतिम भागों में, ईसा मसीह के पहले आगमन के साथ ही चलनी शुरू हुई। यह युगों की समाप्ति और युगों का अंत है। जब प्रभु महिमा के साथ लौटेंगे तो अंतिम भाग समाप्त हो जायेंगे।" लेकिन आप देख रहे हैं कि यंग क्या कह रहा है कि आप यहां आगमन के बीच के समय के बारे में बात कर रहे हैं; अंतिम दिन ईसा मसीह के पहले आगमन और दूसरे आगमन के बीच का समय है। इसलिए इस भविष्यवाणी की सामग्री आगमन के बीच की अवधि में पूरी होगी, और वह इसे उस अवधि के लिए एक तकनीकी शब्द के रूप में लेता है।

आइए पृष्ठ 8 पर जाएँ, पृष्ठ के शीर्ष पर, पहले तीन पैराग्राफ। उन तीन पैराग्राफों में से पहले

दो पैराग्राफ पृष्ठ 98 से आते हैं जहां यंग कहते हैं, "दो विचार हैं जो दर्शाते हैं कि इस वाक्यांश का तकनीकी युगांतशास्त्रीय महत्व है। सबसे पहले, इसे अक्सर उस समय के पुराने नियम में नियोजित किया जाता है जब मसीहाई मोक्ष पूरा हो जाएगा। दूसरे स्थान पर, नया नियम निश्चित रूप से और स्पष्ट रूप से इस वाक्यांश को युगांतशास्त्रीय अर्थ में उस अवधि में लागू करता है जिसने यीशु मसीह के पहले आगमन पर अपना काम करना शुरू किया था।

यदि आप उनके द्वारा दिए गए संदर्भों को देखें, तो मुझे लगता है कि आप आगमन के बीच की अवधि को संदर्भित करने के लिए "अंतिम दिनों में" शब्द को समझने का औचित्य पा सकते हैं। प्रश्न यह है कि क्या यहाँ यही अर्थ है? यंग आगे कहते हैं, "समग्रता के लेख पर ध्यान दिया जाना चाहिए, क्योंकि कुछ लोग इस परिच्छेद को सहस्राब्दी से संदर्भित करते हैं जो चर्च युग के बाद शुरू होगा। लेकिन यहाँ चित्रित आशीर्वाद बाद के दिनों की अवधि में घटित होते हैं। यदि सहस्राब्दी को शाश्वत अवस्था का हिस्सा माना जाता है तो इसे अंतिम दिनों का हिस्सा नहीं माना जा सकता है। और इसलिए उनकी भविष्यवाणी इसका उल्लेख नहीं कर सकती।" देखिए, वह कहते हैं, "यदि सहस्राब्दी शाश्वत अवस्था का हिस्सा है।" यही असली सवाल है। क्या हमें सहस्राब्दी को शाश्वत अवस्था का भाग मानना चाहिए? मैं इसे शाश्वत स्थिति का हिस्सा नहीं मानूंगा। मैं इसे शाश्वत स्थिति से भिन्न मानूंगा। लेकिन, आप देखिए, वह इस अनुच्छेद को सहस्राब्दी के संदर्भ में समझने की संभावना को खारिज कर सकता है क्योंकि यह ईसा मसीह के आगमन के बीच है। एक पूर्वसहस्राब्दी दृष्टिकोण यह कहेगा कि ईसा मसीह पहले लौटेंगे और यह उसके बाद होगा। सहस्राब्दी के बाद का दृष्टिकोण यह कह सकता है कि सुसमाचार का प्रसार इस तक ले जाएगा, लेकिन हम उस पर वापस आएंगे। लेकिन, अगला पैराग्राफ, "वह अवधि जो 'अंतिम दिनों' वाक्यांश द्वारा अभिप्रेत है, ईसाई चर्च का युग है जिसने ईसा मसीह के पहले आगमन के साथ अपना पाठ्यक्रम शुरू किया था।"

अब, अपने उद्धरण पर पृष्ठ 9 पर जाएँ। यंग कहते हैं, "इस अनुच्छेद की व्याख्या करना कठिन है। यह सिखाता है कि वर्णित आशीर्वाद बाद के दिनों में घटित होंगे। और यह तथ्य है, ध्यान दें," वह कहते हैं, "जो बोएटनर और अन्य की सहस्राब्दी के बाद की व्याख्या का समर्थन करता है। देखना रोडरिक कैम्बेल, *इज़राइल और नई वाचा*। साथ ही अन्य अनुच्छेद अंत तक युद्ध जारी रहने

की बात करते हैं। इसलिए, बोएटनर (जिनकी पुस्तक प्रशंसनीय है) जैसे कुछ लोगों का मानना है कि दुनिया अपेक्षाकृत बेहतर हो जाएगी, यह केवल स्वर्ग का एक पूर्वानुभव है। लेकिन वर्तमान परिच्छेद सापेक्ष सुधार की नहीं, बल्कि पूर्ण परिवर्तन की बात करता है। "तब यह आवश्यक है," और यहीं पर यंग वास्तव में अपने निष्कर्ष पर पहुंचता है। वह कहते हैं, "तब यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि भविष्यवाणी पूरी तरह से पूरी होगी," - लेकिन फिर वह एक योग्यता देते हैं - "सैद्धांतिक रूप से बाद के दिनों के दौरान। जब दूसरे आगमन पर पाप दूर हो जाएगा, तो हमें उन सभी आशीर्वादों का एहसास होगा जिनका वादा किया गया है। आप देखते हैं कि यह संतुष्टि पाने का प्रयास करने का एक दिलचस्प तरीका है: सिद्धांत रूप में पूरी तरह से पूरा, लेकिन व्यवहार में पूरी तरह से पूरा नहीं हुआ। यह दूसरे आगमन की प्रतीक्षा कर रहा है, जब पाप दूर हो जायेगा, जब यह पूरी तरह से पूरा हो जायेगा।

उनकी अगली टिप्पणी पर ध्यान दें, "यह व्याख्या कठिन है," मुझे लगता है कि इससे कठिनाई बढ़ती है। "लेकिन यह सब कुछ वह कर सकता है जो कोई व्यक्ति बाइबल की भाषा के प्रति वफादार हो। सहस्राब्दी के बाद की व्याख्या उन अंशों के साथ पर्याप्त न्याय नहीं करती है जो वर्तमान दुनिया के बुरे चरित्र पर जोर देते हैं, एक बुराई जो अंत तक जारी रहती है। मैं इसमें यंग से सहमत हूं। सहस्राब्दी के बाद का दृष्टिकोण जो कहता है कि सुसमाचार का प्रसार इस प्रकार की स्थिति को जन्म देगा जिसमें शांति और न्याय स्थापित होगा। इस तरह के दृष्टिकोण को धर्मग्रंथ के अन्य अंशों के साथ सामंजस्य बिठाना बहुत मुश्किल है जो कहते हैं कि अंत समय में चीजें बदतर होने वाली हैं, बेहतर नहीं, और युद्ध और युद्धों की अफवाहें होने वाली हैं (वीडियो मैट 24)। इसलिए मुझे लगता है कि सहस्राब्दी के बाद के दृष्टिकोण की आलोचना में यंग सही है।

हालाँकि, एच का अपना दृष्टिकोण भी कठिनाइयों में है क्योंकि उसने खुद को यह कहने के बॉक्स में बंद कर लिया है कि यह मार्ग ईसा मसीह के आगमन के बीच पूरा होने वाला है। यदि यह ईसा मसीह के आगमन के बीच पूरा होने वाला है, तो यह अभी पूरा हो रहा है। आप पूछ सकते हैं: "अभी यह कहाँ पूरा हो रहा है? हम इसे कहाँ देखते हैं?" वह जवाब देते, "यह अभी पूरी तरह से पूरा हो गया है, लेकिन सिद्धांत रूप में।" केवल सिद्धांत रूप में। इसकी पूर्ण पूर्ति अभी भी भविष्य में है, ईसा मसीह के दूसरे आगमन पर। तो फिर, क्या यह ईसा मसीह के आगमन के बीच पूरा हो रहा

है या नहीं? उनका कहना है कि इसमें कठिनाइयाँ हैं, लेकिन हम इससे इतना ही कर सकते हैं। मुझे लगता है कि अन्य बेहतर विकल्प भी हैं।

ध्यान दें कि हम कहाँ तक चले गए हैं, और यशायाह 2:2 के इस अंश की व्याख्या पर इस *अहरित् हयामीम* का बहुत अधिक निहितार्थ है। यदि आप इसे एक तकनीकी शब्द के रूप में लेते हैं, जैसा कि यंग करता है, आगमन के बीच के समय के लिए, तो पूर्वसहस्राब्दी व्याख्या को खारिज कर दिया जाता है क्योंकि यह दूसरे आगमन से परे है। तो आप देखिए, इसे केवल एक तकनीकी शब्द के रूप में लेने से, आप एक पूर्वसहस्राब्दी व्याख्या को बाहर कर सकते हैं। यदि आप एक सहस्राब्दिवादी हैं, तो आप इसे आगमन के बीच की अवधि के लिए उस तकनीकी शब्द के रूप में लेते हैं। तब आप यह कहने के लिए मजबूर हो जाते हैं कि अनुच्छेद सैद्धांतिक रूप से पूरा हो गया है, लेकिन वास्तविकता में नहीं, जो संक्षेप में, यंग करता है। उत्तर-सहस्राब्दीवादी, यदि वह इसे उस तरह से लेता है, जैसा कि उनमें से अधिकांश करते हैं, तो उन अंशों के साथ सामंजस्य बिठाना कठिन है जो युद्धों के अंत तक जारी रहने की बात करते हैं जैसे कि मैथ्यू 24:6। तो आप देखिए, आगमन के बीच के समय को एक तकनीकी शब्द के रूप में लेने पर इसके कई निहितार्थ होंगे।

पी रिमिलेनियलिस्ट इसे आगमन के बीच की अवधि के लिए उस तकनीकी शब्द के रूप में लेने के इच्छुक नहीं हैं। लेकिन मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि, यदि आप इसे इस तरह से लेते हैं, तो आप प्रीमिलेनियलिज़्म को एक विकल्प के रूप में बाहर कर देते हैं क्योंकि प्रीमिलेनियलिस्ट इसे किसी ऐसी चीज़ पर लागू करेंगे जो ईसा मसीह के दूसरे आगमन के बाद घटित होगी।

ठीक है, चलो एक ब्रेक लेते हैं और हम वापस आकर इस पर थोड़ा और विचार करेंगे।

विक्टोरिया चांडलर
द्वारा प्रतिलेखित आरंभिक संपादन कार्लो गीमन द्वारा किया गया
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादन
डॉ. पेरी फिलिप्स
द्वारा अंतिम संपादन डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया